शब्दप्रहार® भाग - १

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांति है।

समर्पण

यह पुस्तक समर्पित है
वसुंधरा के उन रक्षकों को,
जो
इसे अपनी विरासत नही
बल्कि
अपने बच्चो की,
धरोहर मानकर
जतन करते है।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांति है।

अल्प परिचय – विलास जैन

विलास जैन इनका जन्म एक छोटेसे गाँव मे हुआ। गाँव मे पढ़ाई की सुविधा न होने के कारण उन्हे छोटी उम्र मे ही गाँव छोड़कर शहरमे पढ़ाई के लिये जाना पड़ा। उन्हे किसी का मार्गदर्शन न होते हुए भी उन्होने सन १९८८ मे पुणे शहरके एक नामांकित संस्थासे एम.बी.ए. (मार्केटींग) का अध्ययन पुरा किया। उसके बाद उन्होने अपना जोड़ने वाले पदार्थोका व्यवसाय शुरु किया। शुरु मे कुछ वर्ष बेचनेका व्यवसाय किया फिर बादमे वही चिजोका खुद उत्पादन शुरु किया। उनका व्यक्तिमत्व बहुमुखी होने के कारण आज वह एक सफल और दूरदर्षी उद्योजक है। उन्होने जोड़नेवाले पदार्थो मे दो नये संशोधन किये। और अनेक उत्पादन खुद बनाये। वह एक सफल उद्योजक, संशोधक, किसान, समाजकारणी, राजकारणी तो है ही, साथ मे एक उत्कृष्ट साहित्यीक भी है। उनके साहीत्य हिंदी एवं मराठी भाषामे है। संपुर्ण साहित्य समाजपयोगी, संस्कारीत करनेवाले, प्रेरणा देनेवाले, अध्यात्म का महत्व बतलानेवाले और नैतिक मूल्य बढ़ाने वाले है। उन्होने हिंदी एवं मराठी भाषामे बालकविताये, प्रेरणा कविताये, देशभक्तीपर कविता, कव्वाली, दोहे, प्रेरक शायरी, सुविचार, सिनेगीत, भजन, जीवन दर्शन कवितायें, ग्रहोपर कविताये, समाज रचनापर कविताये, छोटी शिक्षाप्रद कहानियाँ, मराठी गझल ऐसे अनेक साहित्य का एक बड़ा संग्रह तैय्यार किया है। उनकी अबतक पाँच किताबे प्रकाशित हो चुकी है और पाँच किताबे प्रकाशित होने के मार्गपर है। उनका सामाजिक, राजकीय और अध्यात्मिक विषयोका भरपूर अनुभव तथा गाँव और शहर के वातावरण मे बिताये हुये कई साल, उनको अपने साहित्य मे बहोत ही महत्वपुर्ण साबित हुये है। प्रकृती से अधिक प्रेम होने के कारण उन्होंने आज तक हजारो वृक्ष लगाये है। और संपुर्ण किताबोसे मिलनेवाली राशी पर्यावरण सुरक्षितता में ही खर्च होगी इसका उन्होंने प्रण किया है।

शब्दप्रहार®

प्रकाशन	:	प्रथम
प्रकाशक	:	न्यू ईरा सेल्फ हेल्प (मार्केटींग) इंडिया लि. जलगांव – ४२५ ००१.(महा.)
लेखन	:	विलास जैन
प्रतिया	:	१०००
अक्षरांकन	:	न्यू ईरा सेल्फ हेल्प (मार्केटींग) इंडिया लि.,जलगांव
निर्मिती	:	न्यू ईरा सेल्फ हेल्प (मार्केटींग) इंडिया लि.,जलगांव
मुद्रक	:	विश्वरुपा प्रिंटस्, जलगांव.

New Era Self Help Marketing India Ltd.
All Right Reserved 2013
New Era Self Help Marketing India Ltd. is registered in India under Public Ltd. Company
Act 1956 Reg. No. U51909 MH2002 PLC 138100

सर्वाधिकार सुरक्षित :

पूर्वानुमति के बगैर इस पुस्तक में से किसी भी अंश को किसी भी कारण से या किसी भी रुप में पुनर्मुद्रित नहीं किया जा सकेगा। इस प्रकाशन के संदर्भ में अनधिकृत कृति का पता चलते ही संबंधित व्यक्ति या संस्था पर हानि के संदर्भ कानूनी कारवाई की जायेगी।

यह कार्य नही क्रांति है।

प्रस्तावना

जिंदगी मे संघर्ष करते वक्त अनेक कविताये, कुछ शब्द समुह, सुविचार, शेरो शायरी या दोहे हमारी लढ़ने की शक्ति दुगनी कर देते है। हारती हुई बाजी जितनेमे हमारी हौसला अफजाही कर ऐसे साहित्य हमारे मददगार साबित होते है। अनेक मोड़ोपर यह हमे सही रास्ता दिखाते है। गुमराह होनेसे रोकते है, और हमे सही जीवन जीने की प्रेरणा देते है। मेरे भी जिंदगीमे अैसे अनेक साहित्य मार्गदर्शक, मिल का पत्थर साबित हुये है। उसी से प्रेरणा लेकर मैने सोचा मै भी कुछ ऐसे शब्दसमुह तैय्यार करु जो समाजमे मल्हम, टॉनिक या मार्गदर्शक का काम करेगें। आजके इस सांस्कृतिक प्रदुषन के जमानेमे इन सब चीजो का महत्व पहलेसे ज्यादा बढ़ गया है। क्योकी अब तुम्हे तुम्हारे पथ से गुमराह करने के लिये टि.व्ही. तुम्हारे घरमेही बैठा है। ई-मेल और एस.एम.एस. द्वारा अब आसानीसे बिना किसीको मालुम किये अनेक असामाजिक बाते की जा सकती है। पहले हर किसी की जिंदगी संस्कार, नितीमुल्य, आदर, शर्म और त्याग के धागोसे बंधी रहती थी। पर अब इलेक्ट्रॉनिक्स मिड़िया के आगमन ने इन सभी धागोको तोड़ दिया है। अब हमे क्या खाना है, क्या पीना है, क्या पहनना है, कैसे दिखना है, कैसे बर्ताव करना है, क्या खरीदना है। यह इलेक्ट्रॉनिक्स् मिड़ीया सिखाता है। इतना ही नही हमारे रिश्ते कैसे हो वो भी कई धारावाहिको द्वारा हमारे अवचेतन मन मे बिठाने का काम हो रहा है। मुझे आशा है के इस किताबमे से कुछ शेरो शायरी आपको गुमराह होनेसे रोक सकती है। अगर आप टूट चुके हो, हार चुके हो तो इसमेसे कुछ शेरो शायरी आपके लिये संजीवनिका काम कर सकती है। आपको इस किताबसे कुछ लाभ हुआ तो मेरा लिखना सार्थक होगा।

आपका अपना

विलास जैन

शब्दप्रहार®

।। सूची ।।

१)	प्रेरणास्पद शेरो – शायरी	१.	
२)	स्त्री भ्रूण हत्या रोकने शायरी	२८.	

यह कार्य नही क्रांति है।

प्रेरणास्पद शेरो-शायरी

मिटा रहे है हम खुद की हस्ती
देखना कल पेड़ बन जायेंगे,
दो बूंद के आज हम मोहताज
देखना कल बादल रोककर
पानी बरसायेंगे।

आसमानमे उछालोंगे तो
बिजली बनके गिरेंगे,
जमीन पे पटकोंगे तो
बम बनके फूटेगें,
हमसे ना टकराना
हम जो कहेंगे वही करेंगे।

आज हम पांव के नीचे की मिट्टी है
जो जैसा चाहे रौंध जाये,
कोई दर्दी गर इसकी ईटें बनायें
तो कई मंदिर मस्जिद बन जायें।

आज तुम राख समझते हो हमको
इस राख मे भी कई अंगारे मिलेंगें,
गर बिखेर भी दोगें हमको जमीपर
इस राख का सहारा लेकर
कई फूल खिलेंगे।

तुम मिटाना चाहते हो हमको,
बीज मिटकरही बड़ा बनता है ।
तुम जलाना चाहते हो हमको,
दिया जल कर ही उजाला देता है ।

लाशो के ढ़ेरोमे हमे ना ढूंढ़ना
हम मरने वालोमेसे नही,
हम बसायेंगे ये जहाँ
ये जहाँ हमको नही।

इतने ऊँचाईयोके ख्वाब मत रखो
के इस जमीं को भुला दो,
किसी ने हँसने की उम्मीद रखी है तुमसे
ना कि तुम, उसे रूला दो।

हमको धुँआ समझने वालो
कल तुम पछताओगे,
आज ख्वाब बनकर आसमानमे है,
कल हकीकत बनकर
जमींपर उतर आयेंगे।

तूफानोंका सामना कर के हम
पहुचनेही वाले थे किनारोपर,
मालूम नही था किनारे भी
हट जाते है वक्त आने पर।

विचारोके बाणोको हम तुनीर मे रखते है,
विचारोके सैलाब मे हम बहते नही।
मंझिल हमको ढूढ़ती है,
हम मंझिल को नही।

ऐसी क्या मजबूरी के
बेवकूफोसे वाहवाह करवाये,
ऐसी क्या फुरसत के
नसुधरने वालोको सुधारे।

पाखंडी आदमी के आदर से
अच्छे आदमीकी गाली भली।

दिलवाला जब मतवाला होता है
तो कईयोंको निवाला मिलता है।
और दिलवाला जब दिमागवाला होता है
तो कईयोंके निवाले छीनता है।

हर नुक्कड़ यहाँ दिलवाले बहुत मिलेंगे
प्यार करने वाले नही।
हर शहर यहाँ पैसे वाले बहुत मिलेंगे
मदद करने वाले नही।

जिसके आँखो में पानी,
मुँहमे दुआयें, हाथोमे देने की आदत,
और दिल मे खुशियाँ है,
वही इस युग मे मसीहा है।

खाईओं से ऊपर आने के लिये
नीचेसे छलांग लगाने की कोशिश न कर,
एक एक कदम ऊपर आता जा
पहले तो खाईओं मे गिरने से ड़र।

तूफानोने गिरा दिया तो क्या हुआ
चलनातो सिखा दिया,
भवंर ने डुबो दिया तो क्या हुआ
तैरना तो सिखा दिया,
किस्मतने हरा दिया तो क्या हुआ
जीना तो सिखा दिया।

हम मस्त हवा के झोके है,
मतवाली हमारी चाल है ।
दोस्तो के लिये गले का हार है,
और दुश्मनोके लिये काल है ।

उजालो के चाहतमें
इतना परेशान ना हो,
अंधेरा कटने के बाद
तो उजाला होगा।

गालियाँ कही लगती नही
दिखाती है गाली देने वाले की नियत,
गालियाँ सुननेके बाद भी
जो काम करे, उसे कहते है इन्सानियत।

मंझिल पे चला है
तो भटकेगाही,
भटकके राह पे आ जाये
तो ही तू राही।

आज तू गिरा है
तो क्या हुआ
तू सब्र ना छोड़,
देख वो तुझे
देख रहा है
तू जीना ना छोड़।

डूबने वालोको हम
किनारोपे ले आये,
आज वोही पानी मे
जाने से हमे रोकते है,
शायद उन्हे याद नही के
हम तैरना जानते है।

अपनोकी स्तुती आत्मस्तुती
अपनोकी निंदा आत्मनिंदा।

हमारे चालमे नुक्स निकालने वालों
हमने तुमको चलना सिखाया,
तुम हमे सही और गलत क्या सिखलाओगे
हमने तुम्हे जमाना दिखाया।

तुमने जिसका हाथ थामा था
उसेही हाथ दिखाने लगे,
मस्जिद ये आये थे इबादत करने
खुद ही खुदा बनने लगे।

अंधेरा इतना घना था
लगता था, उजाला होगा ही नही,
अब ठंडी हवाँये महसूस हो रही है
लगता है नजदीक पास सबेरा है कही।

इतने गहराई मे गिरे थे हम
के बाहर आना मुमकिन ही न था,
बस पावोंमें चलने की ताकत और
हाथोमें आशा का टिम टिमाता दिया था।

सब्रके पंखो को लगाये बिना
तू आसमान को नही छू पायेगा,
वक्त के पहले कुछ भी नही मिलता
बार बार उठकर फिर गिर जायेगा।

खुद को अकेला समझता
यह तेरा दोष है।
ऊपर वाला तेरे साथ है
देखले गर तुझे होश है।

खुद के परछाईयों से ड़रने वालों
तुम क्या आशियाना बनाओंगे,
ड़र ड़र के जीने वालो
तुम जीते जी मर जाओंगे।

किसी को मिट्टी समझनेकी भूल ना कर
कल तुझे भी मिट्टी होकर उड़ जाना है।
आज खुशियाँ तुझे उधार मे मिली है
कल तुझे किसीको लौटाना है।

सब्र के बांध को
आज तक ना कोई तोड़ पाया,
जो भी इससे टकराया
खाली हाथ वापस आया।

जब भटक गया था
उम्मीद नही रखता था।
अब राह मिल गई है
तो मंझिल पाने को बेताब हूँ।

उम्मीदो का अंबार
इतना बड़ा मत कर देना,
के तुम्हे उस पार की
अपनी जिंदगी ना दिखाई दे।

चाहता हूँ पतझड़ की तरह
हमारी आशायें भी मुरझाये
तब तो नई आशायें
पल्लवित होंगी।

जिंदगी का मतलब ढूंढ़ने वाले
अक्सर यू ही मर जाते है,
जिंदगी का मकसद ढूंढ़ने वाले
एक बार मे कई जिंदगानिया
जी कर चले जाते है।

न ज्यादा सर्द, ना गर्म, ना नम,
हरदम बीच का रास्ता अपनाये हम।

बाहरका उजाला देखने
शायद आँखो की जरुरत हो,
एक उजाला भीतर भी है
शायद आँखो को उसकी जरुरत हो।

जब जिंदगीको छूना चाहता हूँ,
तो उसके पीछे भागते रहता हूँ।
जब जिंदगी को महसूस करता हूँ,
तो उसे अपने भीतर पाता हूँ।

जब एक जरुरत पूरी करता हूँ,
तो चार और पैदा हो जाती है।
जब उनको नजर अंदाज करता हूँ,
तो अपने आप गुम हो जाती है।

इतना बड़ा आसमान
तेरे अकेले का नही,
चुनले उसमेसे थोड़ासा
गर जीना है तुझे सही।

परेशान जमाना नही करता
परेशान हम अपने ड़र से है,
बाहर वालोका हमे अफसोस नही
अफसोस तो हमे अपनोसे है।

इरादे गर नेक और मेहनत करोगें
तो कामियाब होंगे ही।
ऊपरवाला अच्छाईयोंको बचाने
तुझे कामियाब करेगा ही।

क्यो आदमी गुमनामी से ड़रता है,
सिर्फ जीके क्या बड़ा काम वो करता है,
हजारो तारे चमक कर टूट जाते है,
बिना कुछ किये तू कैसे चल देता है।

पहले जहाँ ड़कैती पड़ती थी
आज वहाँ पुलिस चौकी है।
पहले एक बार मे ही
लुट जाया करते थे,
अब हर रोज किश्तों मे
लुट जाना पड़ता है।

आसमान इतना गहरा
पंख सिर्फ दो ही,
उसमे भी उड़ना सिर्फ
दिन को, रात को नही।

शमा जलाने से पहले
उसके बुझ जाने की सोचते हो,
क्यो अपने हस्ती को
बनने से रोकते हो।

उलझनो के खाईयो मे जब गिरता हूँ
लगता ये कभी खत्म नही होगी,
थोड़ीसी आशा की हवा
मुझे गहराईयोमे से बाहर ले आती है।

आसमान को छूने की तमन्ना है
तो पंखो मे थोड़ा बल इकठ्ठा होने दे,
थोड़ा बैठ कर सोचले
फिर उड़ ले।

धरती के परतोसे अब
चेहरोकी परते गहरी हो गई।
क्या छुपा है चेहरे मे खोजने,
ढूंढ़नी होगी मशीन नई।

सारे विश्व की बौद्धिक संपदा
वक्त को जीत नही सकती,
बौद्धिक संपदा हासिल करने भी
तो वक्त लगता है।

सब्र का चोला ओढ़े
तू वक्त का पुजारी बन
मालूम नही क्या लाने वाला है
कल कौनसा क्षण।

तेरे हौसले पर तालियाँ बजाकर
दाद देने वाले बहुत होंगे
जब तुझे मदद की जरुरत होगी
थोड़ा देर रुकेंगे, सोचेंगे, फिर चल देंगे।

खुद को जलाने अब
शमशान जानेकी जरुरत नही।
भौतिकता के इस दौड़ मे
अब तू आदमी रहा नही।

छोटे मकान उलझे विचार
है प्रदूषण का जमाना
कबसे ढूंढ़ रहा हूँ
दुनियाँ छोड़ जाने का बहाना।

कितनाभी बड़ा क्यो न हो
कल किसी न किसीसे छोटाही होगा।
जीले आज तेरे पास वक्त है
कल वक्त तुझसे विदा होगा।

ये मत पूछो एक चिंगारीसे क्या होता है
चिंगारीसे आग, आग से शोले और
शोलोसे कई जिंदगानियाँ बरबाद होती है।

बुझाने वालो तरफ देखकर
तू दीप जलाना ना छोड़,
वो नही तो हम क्यो
यह तू रिवाज तोड़।

लगी हुई आग का
तू दर्शक ना बन,
पहुचेगी वह तुझ तक
बस जाने दे कुछ क्षण।

जिसमे सहने की ताकत नही
वो दुनियाँ को बेरहम समझता है,
थोड़ा अपने पुरुषार्थ को जगा
फिर देख जमाना कितना मतवाला है।

पहलेसे बवासीर का बीमार
ऊपरसे घुड़सवार।

अंधेरोंसे ड़रते हो तो
उजालोसे सुरक्षित महसूस करना होगा।
उजालोसे ड़रने वालो
तुम्हारा अंधेंरोमे क्या होगा।

कफन काला हो या लाल,
काम आता है
जब निगल जाता है काल।

जिनको मंझिलपर पहुँचा दिया
वोही सही चलनेकी हिदायत देते है।
शायद उन्हे याद नही के उनको
मंझिल तक पहुंचाने वाले हम ही थे।

सपने आँसमान के रखना चाहिए
मगर सपनोको आसमान मे
नही रखना चाहिए।

आज का राजनीतिज्ञ यह
बेवकूफोका सरदार
और दिवाला निकले हुये
सरकारका प्रतिनिधी है।

मुँह काला करने का इतना शौक है
तो खेतो की मिट्टी मुँह पे लगा,
और चमन उजाड़ने का इतना शौक है
तो कुछ पेड़ लगाके दिखा।

आशाओं को कहे प्रफुल्लित हो जाये,
निराशाओ को कहे वह भाग जाये,
प्रेरणाओसे कहे काम आये,
यह और कोई नही हम है आये।

फल तोड़ नही सकता
तो पंछियोंसे भीख मांग
कही वह रहम खाके
तुझे फल तोड़ दे।
जिंदगी जी नही सकता
तो ऊपरवालेसे भीख मांग
कही वह रहम खाके
तुझे मौत देदे।

रोकले गर खुदको
रोक सकेतो,
मेढ़ंक कभी फूगकर
बैल नही होता।

एक आदमी, एक ही काम,
चाहिए गर पूर्ण विश्राम।

खुदा गर देने वाला होता
तो जान क्यू लेता,
तु गर आदमी अच्छा होता
तो जान क्यूं गवाता।

एक एक बूंद पानी टपक रहा है
उससे मै बेजार नही,
बेजार तो मै अपने प्यास से हूँ।

कल फूल काटों पे शरमिंदा थे,
आज फूल काटों पे इतराते है।

ऊँचाईयाँ पार करते जा
शोक ना कर गिरनेपर,
तेरे काबिलीयत का दोष नही
दिखा दे उन्हे फिरसे उठकर।

फूल अपनी कीमत बढ़ाने
क्यो काटोंका सहारा लेते है,
सुंदरता और सुहास देते वक्त
क्यो वो दुनियाँ को
तकलीफ देते है।

खुद को इतना
होशियार ना समझ
के कायनात को
बदलने लगे,
तुझे बनायाही इसके लिये
के तू उसकी सुनने लगे।

मर कर मुझे यारो
कई साल हो गये
धड़कन गिरवी रह गई
उसे ना रिहा कर पाये

एक जीवन बहुत कुछ पानेकी
ओढ़मे अपनो को खोता है,
मुफ्त की खुशियाँ पाने के लिए
क्यु अपना जीवन गिरवी रखता है।

शब्दासे उलझनेमे
न्यायालयोको फुरसत नही
अपराधी और फिर्यादी
खड़े वही के वही।

स्त्री भ्रूण हत्या रोकने शायरी

बाप को बेटे की चाहत
इस तरह दिवाना बना रही है,
के बेटे का बाप बनने का
हर मौका छीन रही है।

माँ तेरे गोदमे मै सलामत,
कल मेरे गोदमे
ये जहाँ सलामत होगा।

ममता के आँचल मे
करुणा चाहती हूँ,
माँ तुझसे मै थोड़ासा
इन्साफ चाहती हूँ।

आर्शीवाद का हाथ सर पर
सुरक्षा का पीठ पर,
माँ ममता और करुणा का
पाठ तू मुझे पढ़ाना,
स्त्री भ्रूण हत्या रहित
समाज है हमको बनाना।

माँ तू मुझे नही
एक माँ को मार रही है,
समाज जिस ड़ाली पर बैठा है
उसीको काट रही है।

माँ ममता और करूणा की
जरुरत आज मुझको,
कल इस जमाने को
यह चीजे कौन देगा।

माँ तेरे आँचल के
दूध की तमन्ना है,
तू कोखसे मुझे
अभी जुदा ना कर।

मिटाना चाहते हो गर स्त्री को
पहले अपने माँ को मिटा दो,
उससे भी तुम्हारा जी ना भरे
तो इस स्त्री रुपी
सृष्टि को खत्म कर दो।

कितने विश्वास से आई तेरे कोख में
तु मुझे जन्म से पहले दूर ना कर,
इस जमानेसे ना सही
कम से कम भगवान से तो ड़र।

माँ इतने जल्दी तू मुझको
तुझसे अलग ना कर,
कर्ज तेरे कोख का
चुकाना है मुझको जीकर।

माँ खून से तूने मुझे बनाया
अब दूध से
मुझे जुदा ना कर,
मै इस जहाँ को बनानेवाली
तू इस सृष्टि को
अपाहिज ना कर।

लगती हूँ जब तेरे आँचल से
लगता है ये जहाँ
प्यार से आबाद कर दूँ,
बिछड़ती हूँ जब तेरे कोख से
लगता है जहाँ
जला के राख कर दूँ।

शब्दप्रहार®

(हिंदी शायरी)

भाग - २

।। सूची ।।

१)	मंझिल	१.	
२)	विड़म्बना	८.	
३)	एहसास	१८.	
४)	दुआ	२०.	
५)	खुशियाँ	२१.	
६)	दु:ख	२३.	
७)	इश्कीया	२४.	

आभार

उन सब के प्रति
जो अच्छे हैं।
अच्छा होने के लिये
सदैव तत्पर हैं।
अच्छा हो इसलिये
प्रार्थना करता हैं।
अच्छा करने के लिये
कड़ी मेहनत करते हैं।
अच्छे व्यक्ति की
दिल से प्रशंसा करते हैं।
और हरदम अच्छे के
पक्ष मे तन-मन-धन
देने को तैयार रहते हैं।
धन्यवाद !
आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

"असफलताओ को मेरे
सहर्ष स्वीकार करता हूँ,
असमर्थताओ का अपनी
मै उपचार करता हूँ,
गिरने से क्या ड़रना,
मै गिरकर चलने का
प्रयास करता हूँ,
अपनोने दी मदद का
कृतज्ञ हो,
मै इजहार करता हूँ।"

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांति है।

कीमत ₹ - १००/-